झाबुआ-म.प्र.। ज्ञानचर्चा के पश्चात् कलेक्टर आशीष सक्सेना को क ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. जयंती।

सोलापुर-महा.। 'बसव सेंटर' सामाजिक संगठन द्वारा सोलापुर उपक्षेत्र संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. सोमप्रभा को 'बसवरत्न' उपाधि से सम्मानित करते हुए स्वामीनाथ महास्वामीजी, शोभाताई बनशेट्टी,महापौर,सोलापुर मनपा, डॉ. सुहास पुजारी,अध्यक्ष,महाराष्ट्र साहित्य परिषद तथा अन्य गणमान्य लोग।

राजिम-छ.ग.। आध्यात्मिक चर्चा के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. नारायण, महामण्डलेश्वर शिव स्वरूपानंद जी,जोधपुर, ब्र.कु. पुष्पा तथा अन्य।

अम्बिकापुर-छ.ग.। बच्चों के लिए 'सात दिवसीय उत्कर्ष समर कैम्प' के कार्यक्रम में मंचासीन हैं सरजुगा सम्भाग के डिप्युटी कमिश्नर सुधाकर खलखो, किसान कांग्रेस के प्रदेश उपाध्यक्ष शैलेष सिंह, नगर पालिका निगम के कमिश्नर एल.के. सिंगरौल, पूर्व सिविल जज डॉ. सुषमा सिन्हा तथा ब्र.कु. विद्या।

राजगढ़-म.प्र.। के.के. मेमोरियल कॉलेज के कार्यक्रम में मंचासीन हैं खादी ग्रामोद्योग के उपाध्यक्ष रघुनंदन शर्मा, नगर अध्यक्षा मंगला गुप्ता, वरिष्ठ वकील एच.वी. व्यास तथा ब्र.कु. मधु।

बैतुल-म.प्र.। उपसेवाकेन्द्र मुलताई के नवनिर्मित 'ज्ञानसूर्य भवन' का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए भोपाल ज़ोन प्रभारी ब्र.कु. अवधेश बहन, विधायक चन्द्रशेखर देशमुख, ब्र.कु. शैलजा, ब्र.कु. प्रतिभा, ब्र.कु. मंजू तथा ब्र.कु. सुनीता।

हज़ारों सूर्यों के समान प्रकाशवान किंतु चन्द्रमा समान शीतल भी

गतांक से आगे...

ग्यारहवें अध्याय के पहले श्लोक से लेकर आठवें श्लोक तक विश्व रूप दर्शन के लिए अर्जुन द्वारा निवेदन के बाद दिव्य चक्षु की प्राप्ति होती है। नौवें श्लोक से बाइसवें श्लोक तक विश्व स्वरूप का विवरण और महिमा बतायी गई है। तेइसवें श्लोक से लेकर पच्चीसवें श्लोक तक अर्जुन की व्याकुल मनोदशा दर्शायी गयी है। पच्चीसवें श्लोक से चौतीसवें श्लोक तक महाकाल स्वरूप और निमित्त भाव के साथ युद्ध करने की प्रेरणा दी गई है। पैत्तीसवें श्लोक से लेकर पैंतालिसवें श्लोक तक अर्जुन का समर्पण भाव और क्षमा याचना का वर्णन है। पैंतालिसवें श्लोक से पचपनवें श्लोक तक अनन्य भाव के बिना प्राप्ति नहीं हो सकती है, इस बात को और ज़्यादा स्पष्ट किया गया है। फिर अर्जुन ने कहा कि आपने जो परम गोपनीय आध्यात्मिक ज्ञान सुनाया, उससे मेरा अज्ञान और मोह नष्ट हो गया है। इसलिए यदि आप मानते हो कि मेरे द्वारा आपका वह रूप देखा जाना संभव है तो हे योगेश्वर, आप अपने अविनाशी स्वरूप का दर्शन कराइए। भावार्थ यह है कि हमें इस बात का स्मरण कराता है कि किस प्रकार भगवान अपने भक्तों के हृदय में स्थित उनके अज्ञान अंधकार को नष्ट कर देते हैं और उन्हें दिव्य चक्षु प्रदान कर समर्थ बनाते हैं। अर्थात् सूक्ष्म विषय को ग्रहण करने की बौद्धिक क्षमता प्रदान करते हैं। जितना व्यक्ति का अनन्य भाव होता है। उतना परमात्मा द्वारा वह दिव्य चक्षु प्राप्त करते हैं, जिससे सूक्ष्म विषयों को ग्रहण करने की बौद्धिक क्षमता मिलती है।

इस तरह से अब संजय बताता है कि अर्जुन ने क्या देखा? संजय ने अपने दिव्य चक्षु से देखा, क्योंकि दिव्य चक्षु का वरदान संजय को भी प्राप्त था। उसने उस दिव्य स्वरूप का वर्णन किया कि आकाश में एक साथ हज़ारों सूर्य उदय होने से जितना प्रकाश होता है वो उस परमात्मा के प्रकाश के सदृश्य है। इतना असीम प्रकाश था और आश्चर्यचकित हर्षित रोमों वाला धनंजय परमात्मा को सिर झुकाकर हाथ जोड़कर के प्रणाम करता है। ये दिव्य स्वरूप जो कहा सभी प्रकाशों में तेजस्वी सूर्य के समान है, लेकिन वो तेज चुभने वाला नहीं, नक्षत्रों में चंद्रमा के समान। इस प्रकार से भगवान ने अपने इक्कीस श्रेणी के सौंदर्य का वर्णन किया। जिसमें सर्वोच्च स्थिति को प्रकट किया वो स्वरूप संजय भी अपनी दृष्टि से देखता है कि कैसे अर्जुन झुक जाता है और प्रणाम करता है उस दिव्य स्वरूप को।

-ब्र.कु. उषा,वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

उसके बाद कमल आसन पर ब्रह्मा जी एवं शंकर को देख रहे हैं। अब ये विराट रूप किसका है? परमात्मा का नहीं है। ये श्रीकृष्ण का है। जिस तन में उन्होंने अवतरण किया था व जिस तन को माध्यम बनाया था- ये गीता का ज्ञान सुनाने के लिए, उसके भी स्वरूप का दर्शन कराता है कि परमात्मा कौन और ये कौन है? श्रीकृष्ण कौन है और वो कौन है? सारे देवताओं, कमल आसन पर ब्रह्मा जी एवं शंकर को देख रहे हैं। परमात्मा आदि, मध्य, अंत रहित अनंत सामर्थ्य से युक्त हैं, जबकि श्रीकृष्ण ने सृष्टि के आदि-मध्य-अंत में समय प्रति समय विभिन्न स्वरूप से जन्म लिया है। अनंत सामर्थ्य युक्त स्वरूप में जन्म लिया। शंख, चक्र, गदा, पद्मयुक्त, प्रकाशमान तेज पुंज स्वरूप को वो अपनी बुद्धि से ग्रहण नहीं कर पा रहा है। परमात्मा इस जगत के परम आश्रय, शाश्वत् धर्म के रक्षक हैं। जबकि श्रीकृष्ण समय प्रति समय पुन: इस संसार में विभिन्न कार्य अर्थ जन्म लेता है, लेकिन वो परमात्मा नहीं है। इसलिये परमात्मा के दिव्य स्वरूप का साक्षात्कार पहले कराया कि वो असीम स्वरूप कौन सा है। भगवान को कहते ही हैं करनकरावनहार। वो किसके द्वारा कार्य कराता है? वो ब्रह्मा, विष्णु और महेश के द्वारा यह कार्य कराते हैं, जो कि आदि, मध्य, अंत तीनों समय में अपने अनंत सामर्थ्य से युक्त होते हैं। भगवान अर्थात् उसी का नाम है परमात्मा जो ये तीनों को भी इतना सामर्थ्य प्रदान करते हैं। सामर्थ्य प्रदान करते हुए वे संसार में अपने स्वरूप को विशेष रूप से रचकर के, इस संसार में शाश्वत् धर्म की रक्षा करने हेतु, ऐसे दिव्य स्वरूप में आते हैं। लेकिन मनुष्य उन्हें पहचान नहीं पाता है।

- क्रमश:

ख़्यालों के आईने में...

खुशी उनको नहीं मिलती जो अपनी शर्तों पर ज़िन्दगी जिया करते हैं। खुशी उनको मिलती है जो दूसरों की खुशी के लिए अपनी शर्तें बदल लिया करते हैं।।

आप यह नहीं कह सकते, कि आपके पास समय नहीं है।
क्योंकि आपको भी दिन में उतना ही समय (24 घण्टा) मिलता है जितना समय महान एवं सफल लोगों को मिलता है।।

बड़ौदा-अटलादरा। चापड़ उपसेवाकेन्द्र पर 'किसान सशक्तिकरण' कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए दिलुभा चुडासमा, एम.के. कुरेशी, राजेशभाई दवे, कपिलभाई शाह, विपिनभाई पटेल, जगदीशभाई बारोट, नरेशभाई पटेल, ब्र.कु. सविता, ब्र.कु. अरुणा तथा अन्य गणमान्य जन।

येवला-महा.। येवला नगरपरिषद में 'आदर्श प्रशासन' विषय पर मार्गदर्शन करने के पश्चात् समूह चित्र में नगरपरिषद की सभी नगर सेविकाएँ, ब्र.कु. नीता तथा ब्र.कु. अणु।

नसीराबाद-महा.। आई.टी.आई. महाविद्यालय में मूल्यों के आधार पर सभी शिक्षकों को त्रिदिवसीय शिविर कराने के पश्चात् समूह चित्र में शिक्षकों के साथ ब्र.कु. दिपाली।